International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(6): 29-31

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(6): 29-31
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-09-2018
Accepted: 10-10-2018

डॉ. प्रियव्रत आर्य
संस्कृत विभागाध्यक्ष, जनता (पी0जी0) कालेज परसोंन, एटा, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. प्रियव्रत आर्य
संस्कृत विभागाध्यक्ष, जनता (पी0जी0) कालेज परसोंन, एटा, उत्तर प्रदेश, भारत

वाग्योग का अर्थ और उसकी परिभाषा

डॉ. प्रियव्रत आर्य

प्रस्तावना

सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में, वैदिक साहित्य का स्थान सर्वोपरि है तथा वैदिक साहित्य में भी ऋग्वेद अति महत्त्वपूर्ण है। 'वाक्' शब्द के महत्त्व को जानने के लिए भी हमारा ध्यान ऋग्वेद पर ही जाता है। ऋग्वेद में 'अस्य वामस्य सूक्त'[1] 'वाचस्पति (बृहस्पति) सूक्त[2] और वाक्सूक्त[3] इन तीनों सूक्तों में 'वाक्' की महिमा का प्रतिपादन देवता के रूप में ही किया गया है। 'अस्य वामस्य' सूक्त में वाक् को आद्यासृष्टि गौरी के रूप में विश्व की चेतनाशक्ति तथा सरस्वती के रूप में बताया गया है। वाचस्पति बृहस्पति सूक्त में शुद्ध वाक् के महत्त्व के प्रतिपादन के साथ ही साथ अर्थवती वाक् की महत्ता भी बतलाई गई है। इसी सूक्त के एक मन्त्र में शब्द और अर्थ तथा उनके सम्बन्ध–ज्ञान का महत्त्व भी प्रतिपादित किया गया है। यहीं पर यह भी कहा गया है कि अर्थ न जानने वाले के लिए ज्ञानराशि का कोई महत्त्व नहीं है।[4]

'वाक् सूक्त' में 'वाक्' का महत्त्व सर्वशक्तिमती देवता के रूप में प्रतिपादित किया गया है। उसे सृष्टि की प्रेरिका, सर्जिका, पालिका और संहारिका शक्ति माना गया है। यहाँ यह व्यक्त किया गया है कि जो मानव वाक् के महत्त्व को नहीं समझते हैं उनका विनाश हो जाता है।[5] इसके अतिरिक्त भी ऋग्वेद में एक स्थल पर 'वाक्' को असुरों पर देवताओं की विजय कराने वाली बताया है।[6] इसी प्रकार एक अन्य स्थल पर उसे समस्त जगत को व्याप्त करने वाली भी बताया गया है।[7]

संहिता–ग्रन्थों के पश्चात् ब्राह्मण–ग्रन्थों में भी 'वाक्' का महत्त्व प्रतिपादित है। जैमिनीय ब्राह्मण में कहा गया है कि सृष्टि के आदि में 'वाक' ही थी।[8] शतपथ ब्राह्मण में 'वाक्' को परब्रह्म के रूप में दर्शाया गया है।[9] भारतीय चिन्तन परम्परा में वाक् को केन्द्रित तत्त्व अंगीकार करते हुए डॉ0 विद्यानिवास मिश्र ने अपना सार इस रूप में प्रस्तुत किया है –'वस्तुतः भारतीय परम्परा आरम्भ से ही वाक्–केन्द्रित परम्परा रही है और इसीलिए न केवल उसमें वाक् को विशिष्ट देवत्त्व प्रदान किया गया है, अपितु वाक् की परिशुद्धता और वाक् की साधना के द्वारा ही परमपद प्राप्त करने की कल्पना भी की गई है।[10] ऐसा प्रतीत होता है कि वाक् चिन्तन की इसी परम्परा में आगे चलकर भर्तृहरि ने 'शब्दब्रह्म'[11] की तथा आचार्य दण्डी ने 'शब्द ज्योति'[12] की कल्पना की है।

इस प्रकार 'वाग्योग' शब्द में प्रयुक्त 'वाक्' शब्द के अर्थ एवं महत्त्व को समझने के लिए भारतीय वाक् चिन्तन–परम्परा की उपर्युक्त पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना आवश्यक है। वाग्योग शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कात्यायन मुनि ने अधोलिखित श्लोक में किया है –

यस्तु प्रयुङ्क्ते कुशलो विशेषे
शब्दान्यथावद् व्यवहार काले।
सोऽनन्तमाप्नोति जयं परत्र
वाग्योगविद् दुष्याति चापशब्दैः।[13]

भाषा व्यवहार में कुशल जो व्यक्ति, विशिष्ट अभिव्यक्ति के लिए शब्दों का उचित प्रयोग करता है, 'वाग्योगविद् वह व्यक्ति इहलोक तथा परलोक में अनन्त विजय श्री को प्राप्त करता है।

कात्यायन मुनि द्वारा रचित उल्लिखित श्लोक उनके 'भ्राजा' नामक श्लोकों में से एक है। महर्षि पतंजलि ने इस श्लोक को अपने 'महाभाष्यम्' ग्रन्थ में व्याकरण के प्रयोजनों के प्रसंग में उद्धृत किया है।[14] इस प्रकार इस श्लोक में प्रयुक्त 'वाग्योग' शब्द और इसके अर्थ पर विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि 'वाग्योग' शब्द 'मुहावरा' शब्द की अपेक्षा, शब्द और अर्थ दोनों ही दृष्टियों से उत्कृष्टतर है। अतः संस्कृत भाषा में यदि 'वाग्योग' शब्द का ही व्यवहार किया जावे तो यह भारतीय वाक् चिन्तन की परम्परा एवं व्यवहार के सर्वथा अनुकूल ही होगा।

वाचो अर्थेन योगः, वाग्योगः, तं वेत्ति यः सः वाग्योगवित् अर्थात् वाक् का (अर्थ के साथ) योग ही वाग्योग है, और उसे जो जानता है, वह वाग्योगवित् कहलाता है। यहाँ पर 'योग' शब्द का अर्थ 'योगः कर्मसु कौशलम्'[15] के अनुसार वाक् कौशल अथवा कवि कुल गुरु कालिदास के अनुसार 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ, वागर्थप्रतिपत्तये'[16] अर्थात् 'वाक् की अर्थ के साथ सम्पृक्तता' ही समझना चाहिये। वाक्कौशल का ज्ञाता व्यक्ति सही अर्थ में प्रयोग करने में समर्थ होता है। भाषा के व्यवहार में वह लोक व्यवहार को प्रमाण मानकर अपने पूर्व प्रयोक्ताओं के शिष्ट प्रयोगों पर भी ध्यान केन्द्रित करता है।[17] उसके पश्चात् अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम चुनता है। यही उसका 'वाग्योग' है। 'वाग्योग' शब्द, अर्थ की दृष्टि से उपयुक्त होने के साथ ही विद्वानों द्वारा सम्यक् ज्ञात और सुप्रयुक्त भी है। अभिनव पाणिनि श्री चारुदेव शास्त्री ने अपने 'वाग्यव्यवहारादर्शः' नामक ग्रन्थ में लिखे 'अनुबन्ध' में 'वाग्योग' शब्द का प्रयोग दो बार किया है।[18] इनके अतिरिक्त संस्कृत–साहित्य के विद्वान रेवाप्रसाद द्विवेदी ने भी 'वाग्योग' शब्द का प्रयोग किया है। कालिदास द्वारा रचित विक्रमोर्वशीयम् नाटक के द्वितीय अंक में 'न खलु अक्षिदुःखितस्य प्रमुखे दीपशिखा सहते'' इस पाठ में 'दीपशिखा सहते' प्रयोग पर उन्होंने निम्नलिखित टिप्पणी की है –''अत्राकर्मकः सहिः। शोभते इति च तदर्थः। सोऽमभिजातो वाग्योगः कालिदासस्य।''[19] यहाँ कालिदासस्य वाग्योगः' से तात्पर्य 'कालिदास का मुहावरा' ही है।

उपर्युक्त विवरण से संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि विद्वानों द्वारा सुप्रयुक्त होने के कारण भी 'वाग्योग' शब्द हमें प्रस्तुत सन्दर्भ में अधिक स्वीकार्य होना चाहिए। मुहावरों का अध्ययन करने वाले हिन्दी अध्ययेताओं का ध्यान भी 'वाग्योग' शब्द पर गया है। 'मुहावरा–मीमांसा' के लेखक डॉ0 ओमप्रकाश गुप्त ने इस विषय को अपने ग्रन्थ में इस प्रकार विवृत किया है –''मुहावरा के स्थान पर अब तक 'प्रयुक्तता', 'रीति', 'बाग्धरा', 'भाषा–सम्प्रदाय', 'वाक्रीति', 'वाक्–पद्धति', 'वाग्यव्यवहार', 'वाक्सम्प्रदाय', विशिष्ट प्रयोग', 'वाक्–वैचित्र्य', 'वाग्योग' तथा 'इष्टप्रयोग' ये बारह 12 नाम देखने और सुनने में आये हैं।'[20]

डॉ0 ओमप्रकाश गुप्त अपने शोध–प्रबन्ध मुहावरा–मीमांसा में इन सभी शब्दों पर विचार मन्थन करके वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इनमें से कोई भी शब्द 'मुहावरा' शब्द के अर्थ को पूर्णतया व्यक्त करने में असमर्थ है, 'उर्दू' और 'हिन्दी' दोनों के निमित्त ही 'मुहावरा' सर्वोपयुक्त है।''[21] किन्तु डॉ0 ओमप्रकाश गुप्त का यह सर्वोपयुक्त शब्द 'मुहावरा' संस्कृतभाषा के लिए हमें ठीक नहीं जान पड़ता। क्योंकि हिन्दी की परिस्थितियाँ संस्कृत से बहुत भिन्न है। इसलिए हमें तो संस्कृत की ही दृष्टि से इसे देखना होगा। यहाँ हमारे लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यही है कि मुहावरा जैसे शब्द को वर्णित करते हुए हम संस्कृत से अवश्य ही जुड़े रहें। अतः संस्कृत में 'मुहावरा' शब्द के अर्थ को व्यक्त करने वाला पूर्णतया उपयुक्त शब्द 'वाग्योग' ही है, जिसे हमें सहर्ष स्वीकार कर लेना चाहिए। यहाँ हम यह भी स्पष्ट करना चाहते हैं कि 'वाग्योग' शब्द को अंगीकार करने में संस्कृत के प्रति हमारा पक्षपात ही सहायक नहीं है, अपितु 'मुहावरा–मीमांसा के लेखक डॉ0 ओमप्रकाश गुप्त ने भी मुक्तकण्ठ से यह स्वीकार किया है कि 'वाग्योग' के अन्तर्गत मुहावरे के प्रायः सभी मुख्यगुण आ सकते हैं।[22]

वस्तुतः 'वाग्योग' शब्द के इतने अधिक उपयुक्त होने पर भी 'मुहावरा–मीमांसा के लेखक हिन्दी की दृष्टि से उसे शब्द केवल इसीलिए अनुपयुक्त ठहरा देते हैं कि हिन्दी में 'वाग्योग' शब्द 'मुहावरा' शब्द के जैसा लोक प्रसिद्ध नहीं हो सका है। तथापि संस्कृत में स्वीकृत हो जाने के पश्चात् हिन्दी में भी 'वाग्योग' शब्द के प्रचलित हो जाने की बहुत अधिक सम्भावना की जा सकती है। इसका कारण है कि 'मुहावरा' शब्द की अपेक्षा 'वाग्योग' शब्द अनेक दृष्टियों से उपयुक्त है। जैसे –

1. बहुप्रचलित होने के बावजूद भी अभी तक हिन्दी में 'मुहावरा' शब्द की वर्तनी निश्चित नहीं हो पायी है। 'मुहावरा' 'मुहाविरा', 'महावरा', 'महावुरा', 'मुहव्वरा' और मुहावुरा इत्यादि भिन्न रूपों में लिखा जाता है।[23]
   मुहावरे की तुलना में 'वाग्योग' शब्द की वर्तनी इतनी निश्चित और स्पष्ट है कि उसमें भिन्न रूपता की कोई सम्भावना ही नहीं है।
2. अरबी शब्द होने के कारण 'मुहावरा' शब्द भारतीय संस्कारों के उतना समीप नहीं है, जितना समीप संस्कृत का 'वाग्योग' शब्द है।
3. अरबी मूल का होने तथा वर्तनी की अनिश्चितता के कारण 'मुहावरा' शब्द के उच्चारण में उतनी सुविधा नहीं है, जितनी कि संस्कृत के 'वाग्योग' शब्द के उच्चारण में है।
4. प्रयोग से शनैः–शनैः यह भी सिद्ध हो जायेगा कि अर्थगाम्भीर्य, अर्थविस्तार, अर्थोदात्तता की जो विशेषतायें 'वाग्योग' शब्द में हैं, वे 'मुहावरा' शब्द में नहीं हैं। इस दृष्टि से 'मुहावरा' शब्द बहुत ही उथला एवं खोखला सा प्रतीत होता है।
5. वर्ण और मात्रा आदि की दृष्टि से 'वाग्योग' और 'मुहावरा' शब्दों के एक–जैसा होते हुए भी, लिंग, वचन और कारक आदि की दृष्टि से 'वाग्योग' शब्द के प्रयोग में जो सुविधा है, वह 'मुहावरा' शब्द के प्रयोग में नहीं है।
   'मुहावरा', 'मुहावरे' और 'मुहावरों' आदि अनेक रूपों की तुलना में 'वाग्योग' इस एक ही रूप का प्रयोग, हिन्दी में सभी स्थलों पर हो सकता है।
6. आकारान्त 'मुहावरा' संज्ञा, पुल्लिंग शब्द है, जो हिन्दी की प्रकृति के बहुत अनुकूल नहीं है। हिन्दी में आकारान्त, पुल्लिंग संज्ञा शब्दों की संख्या बहुत ही कम हैं। अधिकांश पुल्लिंग शब्द अकारान्त ही हैं। अतः अकारान्त, पुल्लिंग 'वाग्योग' शब्द हिन्दी की प्रकृति के भी अधिक अनुकूल है।

वाग्योग की परिभाषा

वाग्योग की परिभाषा करना सरल नहीं है। इसका प्रमुख कारण यह है कि आज तक संस्कृत वाग्योगों का न तो कोई संकलन ही हुआ है और न ही इस विषय की ओर विद्वानों का कोई ध्यान ही गया है। इसलिए जब तक वाग्योगों का कोई संकलन न हो जाये, तब तक 'वाग्योग' की परिभाषा करना दुष्कर कार्य ही है। अभी तो 'मुहावरा' शब्द का पर्याय मानकर मुहावरा के आधार पर ही 'वाग्योग' को समझना हमारे लिए अति सरल है। वैसे यदि देखा जाय तो 'मुहावरा' का भी कोई सर्व सम्मत लक्षण अभी तक हिन्दी में भी निश्चित नहीं हो पाया है। तथापि हिन्दी में 'मुहावरा' शब्द पर विस्तृत विचार करने वालों में पं0 अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का नाम सबसे पहले आता है। 'हरिऔध' जी ने 'महावरा' शब्द पर अनेक दृष्टियों से विचार किया है। अपने विवेचन में उन्होंने 'गया सुल्लगात', 'फरहंग आसफिया', 'मुकद्दमा शेर व शायरी', 'वेबस्टर कोष' और 'हिन्दी शब्द सागर' आदि अनेक ग्रन्थों को उद्धृत किया है।[24] 'बोलचाल' और 'मुहावरा' इन दोनों स्वरूपों को 'मुहावरा' स्वीकार किया है। 'हरिऔध' जी के अनुसार –

1. भाषातत्वविदों और आचार्यों ने बोलचाल पर दृष्टि रखकर जो वाक्य रचना–प्रणाली उद्भावन कर दी है, जिस प्रकार शब्द–विन्यास का उदाहरण उपस्थित किया है, वे ही हमारे आदर्श हैं और आदर्श का नाम रोजमर्रा अथवा बोलचाल है। जहाँ यह रोजमर्रा अथवा बोलचाल साधारण वाक्य से आगे बढ़कर लक्षणा या व्यंजना द्वारा अपना भाव प्रकट करता है और शब्दार्थ से काम नहीं लेता, वहाँ वह 'मुहावरा' हो जाता है।[25]
   'मुहावरा' के इस लक्षण में प्रथम आधे भाग में बोलचाल को स्पष्ट किया है और अन्तिम आधे भाग में लक्षणा एवं व्यंजना का सहारा लेने पर बोलचाल के ही 'मुहावरा' हो जाने की बात बतायी गयी है। किन्तु 'मुहावरा' की सर्वप्रथम विशेषता 'बहुप्रयुक्तता की ओर अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का ध्यान ही नहीं गया है।

2. पण्डित रामदहिन मिश्र ने भी 'मुहावरा' की परिभाषा दी है। इनके अनुसार मुहावरे का लक्षण यह हो सकता है कि जहाँ जिस रीति से बोलचाल के शब्दों और शब्द समूहों का ठीक–ठीक प्रयोग करना चाहिए वहाँ उसी प्रकार उनका प्रयोग करना। अर्थात् लिखने–पढ़ने तथा बोलचाल की परिपाटी के अनुकूल लिखना–पढ़ना और बोलना।[26]
   विचार करने पर यह अवगत होता है कि मिश्र जी के 'मुहावरा' के लक्षण को ही 'हरिऔध' जी ने 'बोलचाल' कहा है। उनके अनुसार लक्षणा–व्यंजना द्वारा अर्थ प्रकट करने पर ही यह बोलचाल 'मुहावरा' बन पाती है।
3. एक अन्य हिन्दी भाषा–मर्मज्ञ श्री हरदेव बाहरी के अनुसार भी हिन्दी ईडियम्स के दो रूप हैं –1 यूसेजेज 2. ईडियम।[27] श्री हरदेव बाहरी द्वारा किये गये 'यूसेज' और 'ईडियम' के लक्षण से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने 'हरिऔध' जी के 'बोलचाल' और 'मुहावरा' के लक्षणों को ही अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। अपनी सूझ–बूझ को नहीं रखा है।
4. डॉ0 ओमप्रकाश गुप्त ने 'मुहावरा' शब्द की व्याख्या विस्तार से की है। पं0 रामदहिन मिश्र, श्री हरिऔध, श्री ब्रहमस्वरूप शर्मा 'दिनकर', श्री रामचन्द्र वर्मा, श्री गया प्रसाद शुक्ल और श्री उदयनारायण तिवारी आदि हिन्दी के विद्वानों के साथ ही उन्होंने 'गयासुल्लुगात' और 'फरहंग आसफिया', आदि उर्दू–कोषों तथा 'हिन्दी विश्वकोष', 'हिन्दी शब्द–सागर' आदि अनेक हिन्दी कोषों से भी 'मुहावरा' शब्द की परिभाषा को उद्धृत किया गया है। अंग्रेजी भाषा के 'ईडियम' को 'मुहावरा' का पर्याय मानते हुए उन्होंने 'ईडियम' के लक्षण पर भी प्रकाश डाला है। ईडियम के विषय में 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका', 'बेबस्टर की 'इण्टरनेशनल डिक्शनरी', 'शार्टर आक्सफोर्ड इंगलिश डिक्शनरी', जे0ई0 वारसेस्टर की 'डिक्शनरी ऑफ दी इंगलिश लैंगुएज', 'इम्पीरियल डिक्शनरी' सर जेम्स मरे की 'न्यू इंगलिश डिक्शनरी', एवं एच0 डब्ल्यू पाउलर के 'मार्डन इंगलिश यूसेजेज', मेकगार्डी के 'इंगलिश ईडियम्स' और 'लोगन पीयरसन स्मिथ' के 'वर्ड्स एण्ड ईडियम्स' आदि अनेक ग्रन्थों को भी उन्होंने उद्धृत किया है।

उपर्युक्त सभी विद्वानों एवं ग्रन्थों के 'मुहावरा' और 'ईडियम' सम्बन्धी विचारों का विश्लेषण करने पर डॉ0 ओमप्रकाश गुप्त ने 'मुहावरा' शब्द की जो परिभाषा दी है, वह निम्नलिखित प्रकार से हैं प्रायः शारीरिक चेष्टाओं, अस्पष्ट ध्वनियों, कहानी और कहावतों या भाषा के कतिपय विलक्षण प्रयोगों के अनुकरण अथवा आधार पर निर्मित और अभिधेयार्थ से भिन्न कोई विशेष अर्थ देने वाले किसी भाषा के गठे हुए रूढ़ वाक्य, वाक्यांश या शब्द इत्यादि को 'मुहावरा' कहते हैं। डॉ0 गुप्त की उपर्युक्त परिभाषा में प्रथम आधा भाग मुहावरों की समुत्पत्ति से सम्बन्ध रखता है। शेष आधे भाग में 'अभिधेयार्थ' से भिन्न कोई विशेष अर्थ देने वाले किसी भाषा के गठे हुए वाक्य'' आदि को मुहावरा कहा गया है। हरिऔध जी के 'बोलचाल अथवा रोजमर्रा' का इसमें ग्रहण नहीं होता है। किन्तु, बोलचाल के मुहावरा होने में कोई सन्देह नहीं है। अतः 'मुहावरा' शब्द की वही परिभाषा उपयुक्त होगी, जिसमें उसके दोनों रूपों–'बोलचाल' और 'मुहावरा' का ग्रहण हो जाय।

इस प्रकार उपर्युक्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए और स्वयं मुहावरों के स्वरूप को देखते हुए हमारे विचार से तो अर्थविशेष की अभिव्यक्ति के लिए वह सर्वोपयुक्त शब्द अथवा शब्द समूह, जो बहु प्रयुक्त होने के कारण, दूसरे शब्दों या शब्द समूहों से अधिक लोकप्रिय हो गया हो, मुहावरा कहलाता है। यहाँ हमने 'मुहावरा' के स्थान पर 'वाग्योग' शब्द चयन कर स्वीकार किया है। अतः 'मुहावरा' की परिभाषा को ही 'वाग्योग' की अपनी परिभाषा बनाते हुए हम उसे इस रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं –

संस्कृत–भाषा में होने वाले अभ्यस्त प्रयोग एवं बहुप्रयोग के कारण रूढ़ हुए विलक्षण प्रयोग ही 'वाग्योग' हैं। यथा– अथकिम्, किम्बहुना, ततस्ततः शान्तंपापम्, मुखमवलोकनम्, लोचनयोः मीलनम्, मार्गदर्शनम्, जलांजलि दानम्, चक्षुर्षोविशालीकरणम्, काष्ठप्रदानम्, कूपमण्डूकः, दीर्घसूत्री, ढपोलशड्खः, शरान् वर्षति, आज्ञां पालयति, मदस्य उन्मूलनम्, दीर्घस्य प्रशमनम्, कर्ण दा, का गतिः इत्यादि।

यहाँ अभ्यस्त प्रयोगों से तात्पर्य भाषा में होने वाले उन प्रयोगों से है, जो भाषण या लेखन में बार–बार होते हैं। ये अभ्यस्त प्रयोग किसी व्यक्ति के भी हो सकते हैं, किसी रचना के भी हो सकते हैं और किसी साहित्यिक विधा के भी हो सकते हैं।

वाग्योग के लिए आवश्यक है कि किसी विशिष्ट अर्थ में प्रयोग बार–बार हो, चाहे एक व्यक्ति के द्वारा हो और चाहे अनेक व्यक्तियों के द्वारा हो। प्रथम बार हुए किसी विशेष प्रयोग पर मुग्ध होकर, जब उसे बार–बार दुहराया जाता है, तो वह प्रयोग 'वाग्योग' बन जाता है। बाद में उसकी विलक्षणता को भी लोग भूल जाते हैं और तब रूढ़ि के रूप में, स्वचालित यन्त्र की क्रिया के समान भाषण और लेखन में उस 'वाग्योग' का प्रयोग होने लगता है। यही कारण है कि वाग्योगों के प्रयोग से भाषा में सम्प्रेषणीयता बढ़ जाती है।

सन्दर्भ

1. द्र0 ऋग्वेद 1/164
2. द्र0 ऋग्वेद 10/71
3. द्र0 ऋग्वेद 10/125
4. उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुनैनं हिन्वन्त्यापि बाजिनेषु। अधेन्वा चरति माययैष वाचं शुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम्।।ऋग्वेद 10/71/5
5. मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणितियईं श्रृणोत्युक्तम्। अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।।ऋग्वेद 10/125/4
6. अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यम्भूषन्निव प्रभरा स्तोममस्मै। वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यो नि रामय जरितः इन्दम्!! ऋग्वेद 10/42/1 तदद्य वाचः प्रथमं मसीय येनासुराँ अभिदेवा असाम। ऊर्जाद उत यज्ञियासः पंचजना मम होत्रं जुषध्वम।!! ऋग्वेद 10/53/4
7. सहस्रधा पंचदशान्युक्था यावद्द्यावापृथिवी तावदितत्। सहस्रधा महिमानः सहस्रं यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्।।ऋग्वेद 10/114/8
8. द्र0 जैमिनीय ब्राह्मण 2/396
9. द्र0 शतपथ ब्राह्मण 14/6/10/5–6
10. भारतीय भाषा शास्त्रीय चिन्तन की पीठिका, भूमिका पृ0 01
11. द्र0 वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्ड 1
12. काव्यादर्शः 1.4
13. द्र0 पतंजलि मुनि महाभाष्यम् 1/1/1
14. द्र0 ''क्व पुनरिदं पठितम् ? भ्राजा नाम श्लोकाः।'' (उद्योत) भ्राजा नाम कात्यायन प्रणीताः श्लोका इत्याहु।ः व्याकरणमहाभाष्यम् ।।1/1/1
15. द्र0 गीता 2.50
16. द्र0 रघुवंशम्, 1.1
17. द्र0 योगश्चित्तवृत्तिर्निरोधः। पतंजलि, योगसूत्रम्, 1.2
18. द्र0 'वाग्योगविदां वरः शवरः'' पृ0 3 तथा 'वाग्योगविदः सूरयः'' पृ0 9
19. द्र0 कालिदास –ग्रन्थावली , पृ0 367 की पाद टिप्पणी
20. द्र0 'मुहावरा–मीमांसा' पृ0 20 ले0 डॉ0 ओमप्रकाश गुप्त
21. द्र0 'मुहावरा–मीमांसा' पृ0 20 ले0 डॉ0 ओमप्रकाश गुप्त
22. द्र0 मुहावरा–मीमांसा, पृ0 16
23. द्र0 मुहावरा–मीमांसा, पृ04
24. द्र0 बोलचाल भूमिका, पृ0 113, 125–126
25. द्र0 बोलचाल भूमिका, पृ0 130, 135–36
26. द्र0 हिन्दी मुहावरे, पृ0 9
27. द्र0 हिन्दी सीमेण्टिक्स, पृ0 256